ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

miegkfuns'kd ¼—f"k ekSle foKku½] Hkkjr ekSle foKku foHkkx] iq.ks   funs'kd] ekSle dsUnz] ngjknwu

o"kZ 27	vad% 100	cqysfVu vof/k% 19 & 23 fnlEcj] 2018	fnu% eaxyokj	fnukad% 18 fnlEcj] 2018

ekSle iwokZuqeku%

भारत सरकार के i'Foh foKku ea=ky; द्वारा वित्त पोषित एवं Hkkjr ekSle foKku foHkkx द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत jk"Vªh; ekSle iwokZuqeku dsUnz] Hkkjr ekSle foKku foHkkx] ekSle Hkkou] ubZ fnYyh द्वारा पूर्वानुमानित तथा ekSle dsUæ] ngjknwu द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा uSuhrky ftys esa vxys ikap fnuksa में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

iwokZuqekfur ekSle rRo	ekSle iwokZuqeku&uSuhrky				
	19/12/2018	20/12/2018	21/12/2018	22/12/2018	23/12/2018
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	15	15	16	16	16
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	4	4	5	5	5
बादल आच्छादन	साफ	साफ	साफ	आंशिक बादल	आंशिक बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	80	80	80	80	80
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	35	35	35	40	40
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	004	006	006	006	006
वायु की दिशा	उत्तर–उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	पश्चिम–उत्तर–पश्चिम	पश्चिम–उत्तर–पश्चिम

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (11 – 17 दिसम्बर, 2018 सुबह 8:30 तक) में आसमान में आंशिक बादल छाये रहे तथा अधिकतम तापमान 5.2 से 13.6 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 1.0 से 3.6 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

Ñf"k ekSle ijke'kZ

Qly çcU/k%

- सरसों में पत्ती धब्बा रोग के नियत्रंण हेतु मैन्कोजेब का 2.5 ग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
- दलहनी फसलो में, क्यूजानफॉप पी–मिथाइल (टर्गा सुपर) 5 ई0 सी0 की 1 ली0 मात्रा को 700 ली0 पानी में घोल बनाकर बुवाई के 15–20 दिन बाद छिड़काव करें।
- भावर क्षेत्र में विलम्ब से बुवाई 25 दिसम्बर तक करे। देर में बोई जाने वाली प्रजातियॉ यू0पी0 2425 यू0पी 2328, पी0बी0डब्लू 373, यू0पी0 2526, यू0पी0 2565 की बुवाई करे।

- ❖ चौड़ी पत्ति एवं घास वर्ग के खरपतवार के नियंत्रण हेतु वेस्टा की 400 ग्रा0 मात्रा का 700 ली0 पानी मे घोल बनाकर 1 हेक्टेयर में बुवाई के 30–35 दिन बाद छिड़काव करे।
- ❖ टोटल (या सल्फोसल्फोरॉन एवं मेटसल्फयूरॉन मिथाईल) 40 ग्रा0 मात्रा को 700 ली0 पानी में घोलकर बनाकर 25–30 दिन बाद/हेक्टेयर में छिड़काव करे।
- ❖ पाला/कोहरा पड़ने की स्थिति में समय–समय पर सिंचाई करें।
- ❖ गेहूँ के बीज का ट्राइकोडर्मा 5 ग्राम + सूडोमोनास 5 ग्राम/1 ग्राम बीज की दर से उपचारित करें।
- ❖ किसान भाई अपने क्षेत्रों के लिए अनुमोदित प्रजातियों की ही बुवाई करें।
- ❖ जैविक खेती करने वाले किसान भाई सभी फसलों हेतु ट्राइकोडर्मा हरजियानम + सोडोमोनास के 5–5 ग्राम/कि0ग्रा0 बीज के हिसाब से बीज उपचार करें। तथा पोषक तत्वों की पूर्ति वर्मीकम्पोस्ट या सड़ी हुई गोबर की खाद एवं जैव उर्वरक के द्वारा करें। भूमजनित बीमारियों की रोक–थाम के लिए 250 ग्राम ट्राइकोडर्मा + 250 ग्राम सोडोमोनास जैव अभिक्रता से प्रति क्विंटल की दर से वर्मीकम्पोस्ट एवं गोबर की खाद को उपचारित कर एक सप्ताह के लिए छाया में रखें तथा बुवाई से पूर्व खेत में अच्छी प्रकार से मिला दें।
- ❖ दलहनी फसलों में खरपतवार नियंत्रण हेतु अगर मजदूर उपलब्ध हों तो पहली निराई, बुवाई के 20–25 दिन बाद और दूसरी 35–40 दिन बाद करें।

m|kuçcU/k%

- ❖ घाटी क्षेत्रो में फूलगोभी, बन्दगोभी, मूली धनिया, पालक, राई मेंथी अजैसी बीजू फसलो में निराई गुड़ाई कर आवश्यकतानुसार सिचाई करे। कीट एवं रोग नियत्रंण हेतु आवश्यकतानुसार रसायनो का भी छिड़काव करें।
- ❖ बन्दगोभी, फूलगोभी, मूली, शलजम आदि बीजू फसलो में निराई गुड़ाई तथा कीट नियत्रंण हेतु रसायनो का छिड़काव करे।
- ❖ टमाटर में पीलापन लिए हुए भूरे धब्बे दिखाई देने पर मैन्कोजेब 2.5 से 3.0 ग्राम प्रति लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ मटर में पौधों की सूखने एवं निचली पत्तियां पीले पड़ने की अवस्था में कार्बन्डाजिम 1.0 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर जड़ों की सिंचाई करें ।
- ❖ आलू में पछेती झुलसा रोग हेतु मौसम अनुकूल है। अतः किसान भाईयो को सलाह दी जाती है कि मैनकोजेब 2.5 ग्रा0/ली0 दर से छिड़काव करें।
- ❖ ऊँचाई वाले क्षेत्रों में जंगली खुमानी, आड़ू, मेहल, जंगली नाशपाती, सेब आदि का बीज इकट्ठा करके सुखायें। तद्पश्चात् उचित उपचार के पश्चात् बोने की प्रक्रिया शुरू करें।
- ❖ खाद उर्वरक तथा फफूदीनाशक/कीटनाशक दवाईयाँ जो गढ्ढों में भरते समय मिट्टी में मिलाई जाती है का प्रबन्ध उचित मात्रा में कर लें।
- ❖ पर्णपाती पौधों में लगाये जाने वाले पौधों की उत्तम किस्मों का आरक्षण अभी से कर ले अन्यथा बाद में अच्छे पौधें न मिलने पर परेशानी हो सकती है।
- ❖ थाले बनाने का कार्य प्रारम्भ करें तथा पेड़ के तनों पर चूना + नीला थोथा तथा अलसी के तेल क्रमशः 30 कि0ग्रा0, 500ग्रा0 और 500 मि0ली0 को 100 लीटर पानी में घोलकर जमीन से 2.3 फिट तक पुताई का कार्य करें।
- ❖

Ik'kikyuiçcU/k%

- ❖ पशुओं को धान की कन्नी आहार के रूप में दें। जिससें उन्हें उर्जा और गर्मी मिलती है।
- ❖ सरदी से बचाव के लिए पशुघर का प्रबंध ठीक से करें। गाय–भैंस को शीतला रोग (रिंडर पेस्ट) का टीका लगवाए।

- पशुओं को ठंड से बचाव हेतु सूखी घास, पुवाल जो जानवरों के खाने के उपयोग में नहीं आती को बिछावन के रूप में प्रयोग करें। खिड़की दरवाजों पर त्रिपाल लगा दें ताकि ठंडी हवा प्रवेश न करें।
- इस बदलते मौसम में नवजात पशुओं में निमोनिया की संभावना ज्यादा रहती है। इसलिए पशुओं की आवास व्यवस्था को सुदृढ़ करें व आहार में गर्म चीजें दें।
- जानवरों में प्रसव दर को ध्यान में रखते हुए पशुशाला को अच्छी तरह साफ–सुथरा, सूखा, रोशनीदार, हवादार होना चाहिए। इसके लिए नालियों में तथा आस–पास सूखे चूने का छिड़काव करें तथा जानवर के नीचे सूखा चारा बिछा दें। प्रसव के उपरांत स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें। ठंड का समय आ गया है अतः ठंड से बचाव हेतु पशुपालक इसकी ओर ध्यान दें।
- भैंस के 1–4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकैराविटूलूरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते है। इसे पटेरा रोग भी कहते है। समय से उपचार न होने की दशा में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान – नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग काली मिट्टी के समान होता है, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरा का होना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान कर सकते है। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औषधी का प्रयोग कर सकते हैं।
- पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पश्चात् 10–15सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पश्चात् पुनः 10–15 सी0सी0 नीम का तेल पिला दें। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।
- मुर्गियों में फफूँदजनित आहार देने से अपलाटॉक्सीकोशिस हो जाती है जिसकी वजह से काफी संख्या में उनकी मृत्यु होने की संभावना होती है। ऐसे में मुर्गियों को पशुचिकितसक की सलाह से दवा दें।
- पशुओं को हरा चारा में सूखा चारा अवश्य मिलाकर दें। अन्यथा आफरा (टिम्पेती) हो सकती है व पनीले दस्त हो सकते है, जिसकी वजह से उनकी मृत्यु हो सकती है।

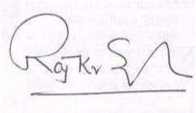

Mk0 vkj0 d0 flg
ik/;kid ,o fifly ukMy vf/kdkjh
xkeh.k df"k ekle lok]
xk- c- iUr df"k ,o ik|k- fo'ofo|ky;] iUruxj